The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 2 | February 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

अवधी साहित्य में पर्यावरणीय चेतना

पिंकी राजपूत

हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

प्रो0 ऋषि कुमार मिश्र

क्रिश्चियन पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18919377

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 22-02-2026

Published: 10-03-2026

Keywords:

अवधी साहित्य, पर्यावरणीय चेतना, प्रकृति-चित्रण, लोकसंस्कृति, सह अस्तित्व

ABSTRACT

अवधी साहित्य भारतीय लोकजीवन और प्रकृति-संवेदना का जीवंत दर्पण है। प्रस्तुत शोध-पत्र में मध्यकालीन तथा आधुनिक अवधी साहित्य में पर्यावरण चेतना का विश्लेषण किया गया है। विशेषतः तुलसीदास और मलिक मोहम्मद जायसी की कृतियों, अवधी लोकगीतों तथा समकालीन रचनाओं के माध्यम से प्रकृति-बोध, सह-अस्तित्व तथा पर्यावरण-संकट की अभिव्यक्ति का अध्ययन किया गया है।

शोध विस्तार

वर्तमान युग में पर्यावरणीय संकट वैश्विक चिंता का विषय बन चुका है। जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, जल-संकट, प्रदूषण आदि समस्याओं ने मानव जीवन को गहराई से प्रभावित किया है। ऐसी स्थिति में 'पर्यावरणीय चेतना' की अवधारणा अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है। यह केवल वैज्ञानिक या तकनीकी विषय नहीं, बल्कि नैतिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक विमर्श का भी महत्वपूर्ण अंग है।

पर्यावरण का स्वरूप

'पर्यावरण' शब्द 'परि' (चारों ओर) और 'आवरण' (घेरना) से मिलकर बना है जिसका अर्थ है वह परिवेश जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है,जिसमें **प्राकृतिक पर्यावरण** (जल, वायु, भूमि, वनस्पति, जीव-जंतु, पर्वत,

नदियाँ आदि।) और **मानव निर्मित पर्यावरण**-(मानव समाज, परंपराएँ, जीवन-पद्धति, आर्थिक गतिविधियाँ आदि।) दोनों तत्व शामिल हैं।

विश्व शब्दकोश के अनुसार- **"पर्यावरण उन सभी दशाओं,प्रणालियों तथा प्रभावों का योग है जो जीवों व उनकी प्रजातियों के विकास,जीवन एवं मृत्यु को प्रभावित करता है।"**

अतः उपर्युक्त आधार पर यह कहा जा सकता है कि जो कुछ भी हमारे चारों ओर विद्यमान है तथा हमारी रहन-सहन की दशाओं एवं मानसिक क्षमताओं को प्रभावित करता है,पर्यावरण कहलाता है।

चेतना की अवधारणा-

'चेतना' से अभिप्राय है- जागरूकता, संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व का भाव।

जब यह चेतना प्रकृति और पर्यावरण के प्रति विकसित होती है तब उसे 'पर्यावरणीय चेतना' कहा जाता है।

पर्यावरणीय चेतना को निम्नलिखित शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है-

पर्यावरणीय चेतना वह जागरूक दृष्टिकोण है जिसके द्वारा मनुष्य पर्यावरण के महत्व को समझता है और उसके संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध होता है।

पर्यावरणीय चेतना मानव और प्रकृति के सह-अस्तित्व को स्वीकार करने वाली विचारधारा है, जो संतुलित और नैतिक उपयोग पर बल देती है।

साहित्य में पर्यावरणीय चेतना से आशय उन विचारों और संवेदनाओं से है, जिनके माध्यम से रचनाकार प्रकृति-संरक्षण, पारिस्थितिक संतुलन और पर्यावरणीय संकटों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करता है।

पर्यावरणीय चेतना के प्रमुख तत्वों को निम्नलिखित आधार पर देखा जा सकता है-

- प्रकृति के प्रति सम्मान के रूप में देखना। 'माता' धरती को -
- जलनदियों - संरक्षण-, तालाबों और वर्षा के महत्व को समझना।
- वनवृक्षों के महत्व और वृक्षारोपण का आग्रह। - संरक्षण-
- प्रदूषणवायु - निवारण-, जल और ध्वनि प्रदूषण के प्रति विरोध।
- संतुलित विकास संसाधनों का सीमित और नैतिक उ -पयोग।

- सहजीवी दृष्टिकोण मानव और प्रकृति का परस्पर संबंध। -

भारतीय परिप्रेक्ष्य में पर्यावरणीय चेतना

भारतीय संस्कृति में प्रकृति को पूजनीय माना गया है। नदियों को देवी रूप में,पृथ्वी को 'माता' तथा वृक्षों को 'जीवनदाता' के रूप में देखना। यह दृष्टिकोण पर्यावरणीय चेतना की प्राचीन आधारभूमि है। वैदिक साहित्य से लेकर आधुनिक साहित्य तक प्रकृति के प्रति श्रद्धा और संरक्षण की भावना दिखाई देती है।

वर्तमान समय में, यह केवल वैचारिक विषय नहीं, बल्कि हमारे अस्तित्व के लिए प्रश्नचिह्न के रूप में हमारे समक्ष है।जलवायु परिवर्तन,ग्लोबल वार्मिंग,जैव-विविधता का ह्रास एवं जल एवं वायु प्रदूषण इन समस्याओं ने पर्यावरणीय चेतना को अनिवार्य बना दिया है।

अवधी साहित्य और पर्यावरणीय चेतना

आधुनिक हिंदी तथा क्षेत्रीय साहित्य(विशेष रूप से अवधी के संदर्भ में) में अनेक कवियों और लेखकों ने प्रकृति-संरक्षण, ग्राम्य जीवन और पर्यावरणीय असंतुलन को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। साहित्य समाज को संवेदनशील बनाकर पर्यावरणीय चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साहित्य का कार्य केवल जानकारी प्रदान करना अथवा मनोरंजन मात्र करना ही नहीं है बल्कि यह मनुष्य को विविध विषयों के प्रति संवेदनशील बनाने में विशेष भूमिका निभाता है। साहित्य के माध्यम से पर्यावरणीय चेतना प्रदान करना रचनाकार का एक नैतिक और सामाजिक दायित्व है। यह मनुष्य को बोध कराती है कि प्रकृति और मानव एक-दूसरे के पूरक हैं। पर्यावरण की रक्षा करना वर्तमान और भावी पीढ़ियों के प्रति हमारी जिम्मेदारी है।

भारतीय साहित्य में प्रकृति को जीवन के अभिन्न अंग के रूप में देखा गया है। अवधी साहित्य में यह चेतना अत्यंत सजीव और आत्मीय है। वन, नदी, वर्षा, ऋतु और पशु-पक्षी यहाँ केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन के केंद्र हैं।

1. **मध्यकालीन अवधी साहित्य में पर्यावरण चेतना-:**

(क) तुलसीदास और प्रकृतिसंवेदना-

गोस्वामी तुलसीदास कृत '**रामचरितमानस**' में वन, पर्वत, नदी, ऋतु और पशु-पक्षियों का अत्यंत सजीव चित्रण है। चित्रकूट, दंडकारण्य, गंगा आदि का वर्णन केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और सांस्कृतिक भी है।राम का वनवास मानव और प्रकृति के सामंजस्य का आदर्श प्रस्तुत करता है।

रामचरितमानस में प्रकृति के साथ,सह-अस्तित्व की भावना का चित्रण किया गया है-

“सिया राममय सब जग जानी,

करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।”

उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से दर्शाया गया है कि समस्त जगत अथवा प्रकृति को राममय माना गया है तथा प्रकृति को ही ईश्वरत्व का रूप मानकर उसके प्रति आदर भाव प्रकट किया गया है।

तुलसीदास ने वन-वर्णन में जैविक समृद्धि को इस प्रकार दर्शाया है-

“फूलहिं फलहिं सदा तरु कानन।”

चित्रकूट प्रसंग में तुलसीदास कहते हैं कि-

चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीर।

इन पंक्तियों के माध्यम से पर्यावरणीय सौन्दर्य को उद्घाटित किया गया है।

- **रामचरितमानस का वर्षावर्णन-**

रामचरितमानस में वर्षा ऋतु का अत्यंत सुंदर चित्रण है-

“घन घमंड नभ गरजत घोरा,

प्रियहीन डरपत मन मोरा।”

“बरषहिं जलद भूमि निअराई,

हरषित होत सबै बनराई।”

यहाँ मेघ, वर्षा और वन का चित्रण केवल दृश्यात्मक नहीं है, बल्कि जीवन के पुनरुत्थान का संकेत है।वर्षा से वनस्पति प्रसन्न होती है।जल चक्र जीवन का आधार है।प्रकृति के संतुलन से समाज और जीव-जगत का कल्याण होता है।तुलसीदास प्रकृति को ईश्वरीय व्यवस्था का अंग मानते हैं, जिससे पर्यावरण संरक्षण एक धार्मिक-नैतिक कर्तव्य बन जाता है।

;ख॒ जायसी का बारहमासा और पर्यावरणीय चेतना

मलिक मोहम्मद जायसी के बारहमासा में बारह महीनों के माध्यम से प्रकृति और मानवीय भावनाओं का अद्भुत समन्वय है।

श्रावण मास का वर्णन-

"सावन बरसे मेघ घनघोरा,

भइ हरियर धरती चहुँओरा।"

यहाँ वर्षा से धरती का हरित होना केवल सौंदर्य नहीं, बल्कि जीवन-संवर्धन का प्रतीक है।

वर्षा जीवनदायिनी है।हरियाली कृषि और जीव-जगत का आधार है।ऋतु-चक्र का संतुलन जीवन के लिए आवश्यक है।जायसी प्रकृति को मानवीय भावनाओं से जोड़ते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य और प्रकृति परस्पर आश्रित हैं।

- **मलिक मोहम्मद जायसी का प्रकृति-चित्रण-**

जायसी द्वारा 'पद्मावत' में प्रकृति का प्रतीकात्मक और सौंदर्यपरक चित्रण मिलता है।वसंत, वर्षा, सरोवर, वन-उपवन आदि का वर्णन पर्यावरणीय सौंदर्यबोध को अभिव्यक्त करता है। पद्मावत में चित्रित वर्षा-वर्णन–

"बरषा रितु आई सुहाई,

हरषित भए बन उपवन छाई।"

यह प्रकृति के जीवनदायी स्वरूप का सशक्त उदाहरण है।यहाँ प्रकृति केवल दृश्य-वर्णन नहीं, बल्कि मनोभावों की अभिव्यक्ति का माध्यम है।

***3.* आधुनिक अवधी साहित्य में पर्यावरण चेतना:-**

आधुनिक अवधी साहित्य में पर्यावरण चेतना अधिक स्पष्ट और प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देती है। औद्योगीकरण, शहरीकरण और प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के प्रति चिंता व्यक्त की गई है।

(क) ***ग्रामीण जीवन और प्रकृति***

आधुनिक अवधी कवि खेत, नदी, पेड़, वर्षा, मिट्टी आदि को जीवन का आधार मानते हैं।

ग्राम्य जीवन की भाषा में प्रकृति के प्रति आत्मीयता स्पष्ट झलकती है।

(ख) ***पर्यावरण संकट का चित्रण***

आधुनिक काल में पर्यावरण संकट वनों की कटाई,प्रदूषण,जल-संकट,औद्योगीकरण आदि वैश्विक समस्या के रूप में उभरा है। हिंदी की अन्य बोलियों की तरह आधुनिक अवधी काव्य में भी यह चेतना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। जहाँ मध्यकालीन अवधी में प्रकृति सौंदर्य और भक्ति का माध्यम थी, वहीं आधुनिक अवधी में प्रकृति संरक्षण, संतुलन और संघर्ष का विषय बन गई है।

कुछ आधुनिक रचनाओं में नदियों का प्रदूषण,वृक्षों की कटाई,वर्षा का असंतुलन तथा कृषि संकट आदि ज्वलंत विषयों पर संवेदनशील अभिव्यक्ति मिलती है।

(ग) प्रकृति का संवेदनात्मक चित्रण

आधुनिक अवधी कवि प्रकृति को केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि पीड़ित सत्ता के रूप में चित्रित करते हैं।

(i) वृक्ष और वन-विनाश

कई आधुनिक अवधी कविताओं में पेड़ों की कटाई पर चिंता व्यक्त की गई है। उदाहरण–

“कटि गएन वन, सूखि गएन नदिया,

रोवत धरती माई।”

यहाँ ‘धरती माई’ का मानवीकरण कर पर्यावरण-नाश की करुण स्थिति दिखाई गई है।

आधुनिक अवधी के लोकधर्मी कवियों–जैसे त्रिलोचन (जिनकी काव्य-भाषा में अवधी-प्रभाव स्पष्ट है)– प्रकृति को ग्राम्य जीवन का आधार मानते हैं। उनकी कविताओं में खेत, मेड़, नदी, आम्र-वृक्ष आदि का सजीव उल्लेख मिलता है।

(ii) जल-संकट और नदी-चेतना

नदी आधुनिक अवधी काव्य में जीवन-रेखा के रूप में चित्रित होती है-

“पियासी धरती, सूखत कूआँ,

कहाँ गयें बदरा घहराय”

यह पंक्तियाँ वर्षा-चक्र के असंतुलन और जल-संकट की ओर संकेत करती हैं।

अवध क्षेत्र की नदियाँ—विशेषतः सरयू नदी—लोकजीवन की आत्मा मानी जाती हैं। आधुनिक कवि इनके प्रदूषण और अवनति पर चिंता व्यक्त करते हैं।

4. पर्यावरण और सांस्कृतिक मूल्य:

अवधी काव्य में पर्यावरण केवल भौतिक तत्व नहीं, बल्कि सांस्कृतिक मूल्य है—

पीपल और बरगद पूजा के प्रतीक,तुलसी का आँगन में रोपण आधुनिक कवि इन परंपराओं के क्षरण पर चिंता जताते हैं-

"ना रहलें आँगन मा तुलसी,

ना छाँह बरगद डारे।"

उपर्युक्त पंक्तियों में सांस्कृतिक और पर्यावरणीय ह्रास को व्यक्त किया गया है।

5. आधुनिक अवधी साहित्य में पर्यावरणीय चेतना

वंशीधर शुक्ल का काव्य-

आधुनिक अवधी काव्यधारा में वंशीधर शुक्ल ग्राम्य जीवन के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। उनकी रचनाओं में प्रकृति केवल सौंदर्य का विषय नहीं, बल्कि जीवन-आधार और सांस्कृतिक अस्मिता का केंद्र है। उनकी कविताओं में पर्यावरणीय चेतना निम्न रूपों में व्यक्त होती है—

(क) ग्राम्य प्रकृति के संरक्षण की चेतना-

शुक्ल जी गाँव, खेत, वृक्ष और जलस्रोतों को जीवन की आत्मा मानते हैं। उनकी कविताओं में प्रकृति के प्रति निम्न भाव प्रकट हुए हैं—

"नीम क पीयर छाँव तले, थकान सबै हरि जाय।

धरती मइया हँसि-हँसि, हरियर चूनर लहराय॥"

यहाँ 'नीम' और 'धरती मइया' का प्रयोग केवल सौंदर्य चित्रण नहीं, बल्कि वृक्षों और धरती के प्रति कृतज्ञता की भावना को व्यक्त करता है। वृक्षों की छाया को जीवनदाता के रूप में प्रस्तुत करना पर्यावरणीय मूल्यबोध को दर्शाता है।

(ख) जल-संरक्षण और नदी-संवेदना-

अवधी क्षेत्र की नदियाँ—विशेषतः सरयू नदी—सांस्कृतिक और पर्यावरणीय दोनों दृष्टि से महत्वपूर्ण रही हैं।

शुक्ल जी के काव्य में नदी जीवन की धारा है—

"सरजू नीर सुधा सम, पावन करै समाज।

सूखि जाय जौ धार तौ, रोवैं खेत-खलिहान॥"

यहाँ जल के सूखने को सामाजिक संकट के रूप में चित्रित किया गया है। यह आधुनिक जल-संकट की पूर्वानुभूति जैसा प्रतीत होता है।

(ग) कृषि और प्राकृतिक संतुलन-

कृषि उनके काव्य का प्रमुख आधार है। वे वर्षा, ऋतु और श्रम के संतुलन को जीवन के लिए अनिवार्य मानते हैं—

"बरसत मेघ समय पर, हरषित भए किसान।

सूखा पड़त बिपति बनि, सूखि जात अरमान॥"

यहाँ पर्यावरणीय असंतुलन (सूखा) को मानवीय पीड़ा से जोड़ा गया है। यह प्रकृति के साथ संतुलित संबंध की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

(घ) शहरीकरण की आलोचना-

वंशीधर शुक्ल ग्रामीण जीवन की सादगी को महत्व देते हैं और कृत्रिम शहरी जीवन से दूरी बनाते हैं।ग्राम्य पर्यावरण को वे नैतिक और सांस्कृतिक शुचिता से जोड़ते हैं।यह दृष्टिकोण आधुनिक औद्योगिक प्रदूषण के विरोध का प्रारंभिक संकेत माना जा सकता है।

(ङ) प्रकृति का मानवीकरण और सांस्कृतिक दृष्टि

धरती को 'मइया', वृक्षों को 'पालनहार' और वर्षा को 'वरदान' कहना भारतीय पर्यावरण-दृष्टि का हिस्सा है। यह दृष्टि पर्यावरण को उपभोग की वस्तु नहीं, बल्कि पूज्य सत्ता के रूप में देखती है।

रमई काका का काव्य

आधुनिक अवधी काव्यधारा में रमई काका का विशिष्ट स्थान है। वे मूलतः ग्राम्य जीवन, लोक-संस्कृति और किसान-चेतना के कवि हैं। उनकी रचनाओं में प्रकृति केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि जीवन की अनिवार्य शक्ति है। खेत, मेड़, वर्षा, नदी, पशु-पक्षी और वृक्ष उनके काव्य-संसार के जीवंत अंग हैं। इसी कारण उनकी कविताओं में पर्यावरणीय चेतना स्वाभाविक रूप से व्यक्त होती है।

कृषि-प्रधान समाज में वर्षा का विशेष महत्व है। रमई काका ने वर्षा को जीवनदाता के रूप में चित्रित किया–

"बरसि गइन जब सावनी बदरिया, अन्न भरे घर-धान।

सूखा पड़ि जाय जौ धरती, रोवैं किसान-प्राण॥"

सूखे की स्थिति को वे केवल प्राकृतिक घटना नहीं, बल्कि मानवीय संकट के रूप में देखते हैं। यह पर्यावरणीय असंतुलन के प्रति सजग दृष्टि है।

3. जल और नदी के प्रति संवेदना

अवधी क्षेत्र की जीवनरेखा रही गंगा नदी तथा अन्य स्थानीय नदियाँ लोकजीवन से गहराई से जुड़ी हैं। रमई काका जल को पवित्र और जीवन का आधार मानते हैं–

"नदिया नीर बचे रहैं, तब रहि जाई संसार।

सूखि गइन जौ धार सब, कौन करै उद्धार॥"

यहाँ जल-संरक्षण का स्पष्ट संदेश है। नदी के सूखने को वे संपूर्ण जीवन के संकट के रूप में चित्रित करते हैं।

4. वृक्ष और हरियाली का महत्व

रमई काका की रचनाओं में वृक्षों की छाया, आम्र-वाटिका, पीपल और नीम का बार-बार उल्लेख मिलता है–

“पीपर-नीम न काटिअ, देत सबैका छाँव।

इनसे जीवन बसत है, हरियर रहै यह गाँव॥”

यहाँ वृक्ष-विनाश के विरोध और संरक्षण का स्पष्ट संदेश है। ग्रामीण पारिस्थितिकी की रक्षा को वे सामाजिक कर्तव्य मानते हैं।

5. शहरीकरण और कृत्रिमता की आलोचना-

रमई काका ने ग्राम्य जीवन की सादगी को आदर्श माना और कृत्रिम शहरी जीवन की आलोचना की।उनकी दृष्टि में प्राकृतिक जीवन ही स्वस्थ और संतुलित जीवन है। यह आधुनिक औद्योगिक प्रदूषण के विरुद्ध एक सांस्कृतिक प्रतिरोध भी है।

रमई काका का ग्राम-प्रकृति चित्रण

रमई काका ने ग्राम्य-जीवन और खेत-खलिहान का अत्यंत जीवंत चित्रण किया है-

“हरियर-हरियर खेत लहरैं,

गावत ग्वैयाँ धान।

पवन बहत मन्द-मन्दवा,

महकत गाम-आन।”

यहाँ खेतों की हरियाली, मंद पवन और ग्राम की सुगंध ग्रामीण पर्यावरण की सजीवता को दर्शाते हैं।

कृषि-प्रधान जीवन में प्रकृति का संरक्षण अनिवार्य है।खेत, पशु, जल और वृक्ष ग्राम्य-जीवन के आधार हैं।पर्यावरण की समृद्धि से ही ग्राम की खुशहाली संभव है।

गिरिजाशंकर मिश्र ‘गिरिजेश’ का ग्राम-प्रकृति चित्रण

गिरिजाशंकर मिश्र (‘गिरिजेश’) की कविताओं में ग्राम्य-प्रकृति और पर्यावरणीय संतुलन का भाव मिलता है-

“सरि-खाड़ी, दीप, समुन्दर की,

तसवीर बनावा साथे मा।”

"पै यतनी भारी धरती मा,

हकु नहिन अन्त अपना ध्वारा।"

यहाँ धरती की व्यापकता और मनुष्य के सीमित अधिकार का बोध कराया गया है।धरती पर मनुष्य का स्वामित्व नहीं, उत्तरदायित्व है।प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग उचित नहीं।प्रकृति के प्रति विनम्रता और संतुलन आवश्यक है।

अतः यह कहा जा सकता है कि अवधी साहित्य में प्रकृति केवल सौंदर्य का विषय नहीं, बल्कि जीवन और संस्कृति का मूल आधार है। जायसी ने ऋतु-चक्र के माध्यम से प्रकृति-मानव संबंध को दर्शाया।तुलसीदास ने वर्षा-वर्णन में प्रकृति की जीवनदायिनी शक्ति को व्यक्त किया। आधुनिक अवधी के प्रतिनिधि कवियों में वंशीधर शुक्ल,रमई काका और गिरिजशंकर मिश्र 'गिरिजेश' का काव्य ग्रामीण पर्यावरण का जीवंत दस्तावेज है। उनकी पर्यावरणीय चेतना आधुनिक 'पर्यावरण आंदोलन' से पूर्व की होते हुए भी अत्यंत प्रासंगिक है। वे प्रकृति को उपभोग की वस्तु नहीं, बल्कि जीवन-सहचरी मानते हैं।उनकी काव्य-दृष्टि पर्यावरण-संरक्षण के मूल्यों को स्थापित करती है।

इस प्रकार अवधी साहित्य में पर्यावरणीय चेतना लोकजीवन से जुड़ी, सांस्कृतिक और नैतिक है,जो आज के पर्यावरण संकट के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है।

अवधी लोकगीतों में पर्यावरणीय चेतना-

लोकगीतों केवल मनोरंजन के लिए नहीं होते बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय चेतना के संवाहक भी रहे हैं। अवधी लोकगीतों के संदर्भ में पर्यावरणीय चेतना विशेष रूप से प्रकृति, ऋतुओं, कृषि, जल, वृक्ष, नदियों और मानव-प्रकृति के अंतर्संबंध पर आधारित होती है।

1. ऋतुगीत और प्रकृति-आधारित अवधी लोकगीत

अवधी परंपरा में कजरी और चैती जैसी ऋतु संबंधी गीतों में प्रकृति-चक्र, मानसून, हरियाली व खेती-बाड़ी का वर्णन मिलता है।

कजरी गीतों में अक्सर बारिश, बादल, सर्दी-गर्मी व मानसून की प्रतिक्षा तथा प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन आता है, जो कृषि और जीवन-चक्र से जुड़े सामाजिक चेतना को उजागर करता है। इससे प्रकृति के महत्व को समझने तथा पर्यावरणीय संतुलन की अनुभूति होती है।

चैती ऋतुगीतों में वसंत ऋतु, फूलों की खिलावट, नदियों की बहती बयार जैसी प्रकृति-आधारित छवियाँ पर्यावरण और जीवन-शैली के गहरे संबंध को दर्शाती हैं।

“बदरिया बरसै रे... सावन की र◌ॅत आई” - बादलों, वर्षा, हरियाली और पसीने की खुशबू का वर्णन।

यह गीत प्रकृति से जुड़े जीवन-आधारित चेतना को दिखाता है।

2. जल और वृक्ष-संरक्षण से जुड़े लोकगीत

लोकगीतों में पानी, नदियाँ और वृक्ष-पौधे (जैसे पीपल, नारियल, तुलसी, नीम इत्यादि) पर्यावरण के प्रतीक के रूप में वर्णित होते हैं—इनका मानव जीवन और धार्मिक संस्कृति के साथ गहरा संबंध बताया जाता है।

उदाहरण स्वरूप एक गीत में बताया गया है कि “आम पुत्र है, निमिया माता”— आम को पुत्र और नीम को माता रूपक में कहा जाता है, जिससे पेड़ों के संरक्षण और उनके सम्मान की चेतना दर्शायी जाती है।

तुलसी और पीपल के पौधे का पूजा-अर्चना और पारिवारिक अनुष्ठानों में उपयोग—इन लोकगीतों में तुलसी एवं वृक्षों का उल्लेख मानव-पर्यावरण संबंध को दर्शाता है।

“तोहरी कहलका प्रभु में ना पत्तिअइबों, तुलसी चउरवा छुई आव हो राम।”

यह गीत तुलसी के रिश्ते में प्रकृति के सम्मान को उजागर करता है।

अवधी लोकगीतों में पर्यावरणीय चेतना निम्नलिखित रूपों में स्पष्ट होती है:

ऋतु-आधारित गीत: मानसून, वसंत, हरियाली और कृषि के साथ प्रकृति-जीवन का जिक्र।

प्रकृति-वृक्ष और जल का सम्मान: पेड़-पौधे, नदी और जल संरक्षण के प्रतीक गीत।

पर्यावरण संरक्षण के संदेश: समकालीन लोकगीतों में पर्यावरण चेतना का प्रत्यक्ष रूप।

सावन-गीत-

“सावन आयो रे, हरियर भई डार।”

खेती से जुड़े गीत–

“बरसो राम धड़ाके से, खेतन मा हरियाली छाए”।

यहाँ वर्षा और हरियाली को जीवन का आधार माना गया है।

निष्कर्ष

अतः उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में, पर्यावरणीय चेतना न केवल वैचारिक विषय है वरन् यह आज हमारे अस्तित्व के लिए प्रश्नचिह्न बनकर खड़ा है।जलवायु परिवर्तन,ग्लोबल वार्मिंग,जैव-विविधता का ह्रास एवं जल एवं वायु प्रदूषण आदि इन ज्वलंत मुद्दों ने पर्यावरणीय चेतना को नितांत अनिवार्य बना दिया है। अवधी साहित्य में पर्यावरणीय चेतना केवल सौंदर्यबोध तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन-दर्शन का अभिन्न अंग है। मध्यकालीन साहित्य में प्रकृति आध्यात्मिक सहचरी है, जबकि आधुनिक साहित्य में वह संरक्षण और संतुलन की पुकार बन जाती है। इस प्रकार अवधी साहित्य पर्यावरणीय संतुलन, सह-अस्तित्व और प्रकृति-प्रेम का सशक्त वाहक है।

संदर्भ ग्रंथ:-

- गुप्त, गणपति चंद्र हिंदी .साहित्य का वैज्ञानिक इतिहासलोकभारती प्रकाशन ., 2008, पृ .215-230.
- जायसी, मलिक मोहम्मदनागरी प्रचारिणी सभा :संपादित .पद्मावत ., 2011, पृ .110-118.
- मिश्र, विद्यानिवास, संपादकभारतीय ज्ञानपीठ .अवधी लोकगीत संग्रह ., 2005, पृ .75-82.
- शुक्ल, रामचंद्रहिंदी साहित् .य का इतिहासलोकभारती प्रकाशन ., 2012, पृ .145-152.
- सिंह, नामवरराजकमल प्रकाशन .कविता के नए प्रतिमान ., 2010, पृ .98-105.
- तुलसीदासगीता प्रेस .रामचरितमानस ., गोरखपुर, नवीन संस्करण, बालकाण्ड, पृ .23; अयोध्याकाण्ड, पृ .304; किष्किंधाकाण्ड, पृ .514.
- तुलसीदासरितमानसरामच–, गीता प्रेस, गोरखपुर।**23 तुलसीदास),304,514(**
- जायसी, मलिक मोहम्मदमाताप्रसाद गुप्त :संपादक .पद्मावत ., लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2008, पृ.118-112 .
- तुलसीदास, गोस्वामीगीता प्रेस .(किष्किंधा कांड) रामचरितमानस ., गोरखपुर, नवीन संस्करण, पृ . .352-345
- रमई काकाउत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान .रमई काका रचनावली ., लखनऊ, 1998, पृ.72-67 .
- मिश्र, गिरिजाशंकर .’गिरिजेश‘गिरिजेश काव्यहिंदी साहित्य निकेतन .संग्रह-, लखनऊ, 2005, पृ . .52-46

- शर्मा, रामविलासराजकमल प्रकाशन .भारतीय साहित्य और पर्यावरण ., नई दिल्ली, 2010, पृ . .215-201
- शर्मा, पीरस्तोगी पब्लिकेशन्स .पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी .डी ., मेरठ, 2011, पृ .1-15.
- त्रिपाठी, आरमोतीलाल बनारसीदास .पर्यावरण अध्ययन .एस ., दिल्ली, 2005, पृ .3-18.
- दुबे, श्यामसुंदरवाणी प्रकाशन .पर्यावरण और साहित्य ., नई दिल्ली, 2012, पृ .1-20.
- www.apnimaati.com